



Ignited minds

जब कोई हमारे साथ गलत करता है, तब मन में क्रोध आना स्वाभाविक है,
परन्तु क्रोध में कही गई बात अक्सर बिगड़ जाती है।

६ मिनट हिन्दी

प्रश्न 1. यदि कोई हमारे साथ गलत करे, तो क्या क्रोध में अपने लिए खड़े होना गलत है?

जब कोई हमारे साथ गलत करता है, तब मन में क्रोध आना स्वाभाविक है, परन्तु क्रोध में कही गई बात अक्सर बिगड़ जाती है। यदि हम शान्त होकर अपनी बात समझदारी से कहें, तो सामने वाला हमारी बात अच्छे से समझता है। अपने अधिकारों की रक्षा करना आवश्यक है, परन्तु क्रोध किए बिना भी यह किया जा सकता है।

सीख: शान्त मन से कही गई बात सबसे अधिक प्रभावी होती है।

प्रश्न 2. चंचल मन को एक काम में एकाग्र कैसे करें?

मन को एकाग्र करने के लिए प्रतिदिन अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। ध्यान करने से मन शान्त होता है। गीता जी का पठन मन को स्थिर और पवित्र बनाता है। पढ़ाई के बीच छोटे विश्राम लेने से मन फिर से ताज़ा हो जाता है और कार्य में रुचि बनी रहती है।

सीख: नियमित अभ्यास से एकाग्रता बढ़ती है।

प्रश्न 3. धर्म और कर्म में क्या अन्तर है?

धर्म हमें सही मार्ग दिखाता है और कर्म हमें उस मार्ग पर चलाता है। जब हम धर्म के अनुसार कर्म करते हैं, तब जीवन में शान्ति और सफलता मिलती है। केवल कर्म करना पर्याप्त नहीं, उसे सही भावना से करना आवश्यक है।

सीख: सही कर्म ही सच्चा धर्म है।

प्रश्न 4. यदि स्वर्ग के बाद पुनर्जन्म होता है, तो क्या नर्क के बाद भी होता है?

हाँ, होता है। आत्मा अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगकर फिर पृथ्वी पर जन्म लेती है। यह नया जन्म सुधार का अवसर होता है, ताकि हम और अच्छे कर्म कर सकें।

सीख: हमारे कर्म ही हमारा भविष्य बनाते हैं।

प्रश्न 5. क्या साधुओं में केवल सात्त्विक गुण ही होते हैं?

साधुओं में सत्त्वगुण अधिक होता है, जिससे वे शान्त रहते हैं। परन्तु वे अभ्यास से अपने मन को नियंत्रित कर लेते हैं और किसी गुण के अधीन नहीं रहते।

सीख: आत्मसंयम से जीवन श्रेष्ठ बनता है।

प्रश्न 6. मोक्ष के बाद महापुरुष पुनः जन्म क्यों लेते हैं?

वे समाज का कल्याण करने, लोगों को सही मार्ग दिखाने और प्रेम फैलाने के लिए आते हैं। उनका जीवन सेवा से भरा होता है।

सीख: जीवन सेवा के लिए है।

प्रश्न 7. अच्छे और बुरे शब्द कैसे पहचानें?

जो शब्द किसी को दुःख पहुँचाएँ या अपमान करें, वे अच्छे नहीं होते। हमें हमेशा शिष्ट और मधुर भाषा बोलनी चाहिए।

सीख: मधुर वाणी सबका मन जीत लेती है।

प्रश्न 8. डायनासोर किस युग में रहे होंगे?

संभावना है कि वे बहुत प्राचीन काल में रहे हों। पृथ्वी पर जीवों का विकास समय के साथ हुआ है,

इसलिए बड़े जीव पहले रहे होंगे।

सीख: संसार समय के साथ बदलता रहता है।

प्रश्न 9. रावण को भक्त क्यों नहीं कहा जाता?

उसकी पूजा प्रेम से नहीं, बल्कि लाभ पाने के लिए थी। सच्ची भक्ति निस्वार्थ होती है।

सीख: भक्ति में स्वार्थ नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 10. क्या भूत होते हैं?

वे भी एक प्रकार की योनि हैं, पर हमें डरने की आवश्यकता नहीं। ईश्वर हमें साहसी बनने की शिक्षा देते हैं।

सीख: निर्भय रहना ही सच्ची शक्ति है।

प्रश्न 11. सच्ची तपस्या क्या है?

अपने कर्तव्यों को पूरी लगन और ईमानदारी से निभाना ही तपस्या है।

सीख: कर्तव्य पालन सबसे बड़ा धर्म है।

प्रश्न 12. क्रोध को कैसे शान्त करें?

ईश्वर का स्मरण करें, गहरी साँस लें और थोड़ी देर रुकें। मन अपने आप शान्त हो जाता है।

सीख: धैर्य से हर समस्या हल होती है।

प्रश्न 13. सत्सङ्ग का महत्व क्या है?

सत्सङ्ग हमें सही दिशा देता है और मन को शान्ति प्रदान करता है।

सीख: अच्छा संग जीवन को उज्ज्वल बनाता है।

प्रश्न 14. गीता अध्ययन में हमारा प्रयास क्यों आवश्यक है?

अवसर ईश्वर देते हैं, पर उसका लाभ तभी मिलता है जब हम परिश्रम करें।

सीख: प्रयास से ही सफलता मिलती है।

प्रश्न 15. श्रद्धा से चमत्कार क्यों होते हैं?

गहरी आस्था मन को शक्तिशाली बनाती है और असंभव को भी संभव कर देती है।

सीख: विश्वास में अद्भुत शक्ति होती है।

प्रश्न 16. वेद हमें कैसे प्राप्त हुए?

ऋषियों ने तपस्या से उन्हें जाना और वेदव्यास जी ने उन्हें लिखा।

सीख: ज्ञान साधना से प्राप्त होता है।

प्रश्न 17. ईश्वर को पाने का मार्ग क्या है?

श्रद्धा, भक्ति और अच्छे कर्म ही ईश्वर तक पहुँचाते हैं।

सीख: शुद्ध हृदय में ईश्वर वास करते हैं।

प्रश्न 18. साधु-सन्त अपने अनुभव क्यों नहीं बताते?

क्योंकि उनका आनन्द शब्दों से परे होता है और वे विनम्र रहते हैं।

सीख: सच्चा सुख भीतर होता है।

प्रश्न 19. सात्विक भोजन क्यों श्रेष्ठ है?

यह शरीर को स्वस्थ और मन को शान्त बनाता है।

सीख: जैसा भोजन, वैसा जीवन।

प्रश्न 20. अच्छे गुण कैसे विकसित करें?

ध्यान, अध्ययन, शुद्ध आहार और अच्छे व्यवहार से।

सीख: छोटे अच्छे प्रयास बड़े परिवर्तन लाते हैं।

Q21. Why was Bhima's grandson, Barbarik, not allowed to fight in the Mahabharata war, even though his arrows never missed and he vowed to support the weaker side?

Barbarik had promised to always help the weaker side in battle. But in the Mahabharata war, this would have caused endless fighting. Each time one side became stronger, the other would turn weaker, and Barbarik would switch sides again. This would keep the war going and could destroy both armies.

Shri Krishna stopped him because the war was meant to restore **Dharma (righteousness)**, not to follow strength or emotion. Supporting the weaker side is not always right — we must support what is just and true.

Takeaway:

Always stand with truth and Dharma, not simply with the weaker side.

